IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय सैन्य बलों में महिलाओं की भूमिका

First Author

LALITA DEVI

MA(Political science)

Center University of Himachal Pradesh

second Author

MONIKA DEVI

MA(Political science)

Center University of Himachal Pradesh

सार: आज के युग में महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। शस्त्र बलों में भी महिलाएं अपनी भूमिका बखूबी निभा रही हैं। 2020 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा महिला अधिकारियों को स्थायी कमीशन देने का ऐतिहासिक निर्णय सुनाया। अब महिलाएं सेना का नेतृत्व करेंगी तथा कमांड पोस्ट संभालेगी। 21वीं सदी में नारी की छवि में तीव्रता से बदलाव हुआ है। महिलाएं समाज के लिए शक्ति तथा शौर्य के रूप में सामने आ रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत के तीनों सेना वलों में महिलाओं की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। भारतीय सेना में 0.56% महिलाएं, भारतीय वायु सेना में 1.08% और भारतीय नौसेना में 6.5% महिलाएं है। महिलाओं की इस भूमिका को ओर अधिक व्यापक बनाया जा रहा है। इस लेख में हम महिलाओं की सैन्य बलों में स्तिथि तथा उसकी लडाकू क्षेत्र में भूमिका की चर्चा करेंगे।

मुख्य बिन्दु : महिलाएं की लड़ाकू भूमिका, सशस्त्र बल

"जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक दुनिया के कल्याण के बारे में सोचना असंभव है। एक पक्षी इसके लिए केवल एक पंख पर उड़ना असंभव है।" स्वामी विवेकानंद

परिचय

भारतीय सशस्त्र बल सैन्य मूल्यों, राष्ट्रवाद, प्रतिबद्ता और राष्ट्र की सामूहिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें मुख्य रूप से थल सेना, नौसेना और वायु सेना व अर्धसैनिक आदि सेवाएँ शामिल हैं। यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी सेना है (Sharma, Gupta, 2021)। पितृसत्तात्मक समाज में हमेशा से ही सेना के लिए पुरुषों को ही उपयुक्त माना गया है। पुरुषप्रधान समाज में महिलाओं को दूसरी श्रेणी के नागरिक का दर्जा दिया गया है। महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता है, परंतु प्राचीन समय में ऐसा नहीं था महिलाओं को पुरुषों के समान समझा जाता था तथा महिलाएं पुरुषों के समान ही अधिकार रखती थी। यदि हम अपने इतिहास की ओर नजर दौड़ाएं तो पाएंगे कि महिलाओं ने जीवन के हर मोड़ यह साबित करके दिखाया है कि वह पुरुषों के समान कार्य करने में सक्षम हैं। हमारे इतिहास में कई ऐसी वीरांगनाएं हैं, जिन्होंने सैन्य वल में अपनी भूमिका बखूबी निभाई हैं। रजिया सुल्तान, रानी लक्ष्मीबाई, वीना दास आदि का जिक्र आता है जिन्होने महिला की वास्तविक शक्ति को दुनिया को साबित करके दिखाया था परंतु आज की वास्तविकता बहुत अलग है। महिलाओं को उसका सही स्थान देने में हम चूक रहे हैं। महिला भी देश के गौरव और गर्व के लिए सेना में आना चाहती है। जिसके लिए उन्हें पूर्ण तथा समान अवसर प्रदान करने की जरूरत है।

अगर हम देश की स्वाधीनता की लड़ाई में भी देखे तो महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर अपनी भूमिका दर्ज करवाई है। आज़ादी की इस लड़ाई में लड़ रही आजाद हिंद फौज के नेता सुभाष चंद्र बोस के द्वारा पहली बार महिलाओं को सेना में भर्ती करना महत्वपूर्ण समझा गया। आजादी की इस जंग में महिलाओं को शामिल करने के लिए रानी झांसी रेजिमेंट बनाया। लक्ष्मी स्वामीनाथन को रेजिमेंट की कैप्टन बनाया गया। इस रेजिमेंट ने आजाद हिंद फौज से कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध में विजय हासिल की थी। इसके पश्चात् 50 वर्षों के अंतराल के बाद 1992 में महिलाओं को सेना में शामिल करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। महिलाओं को स्थाई कमीशन देने के लिए महिलाओं के द्वारा लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी। 2020 में सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं को स्थायी कमीशन देने का ऐतिहासिक व दूरगामी फैसला सुनाया। महिलाओं को समान अवसर देने के लिए उन्हें भी पुरुषों के समान स्थायी कमीशन दिया गया। स्थायी कमिशन में महिला अधिकारियों के पास विकल्प होता है कि नौकरी पूरी करने के बाद वह स्थायी कमिशन का चुनाव कर सकती है या फिर वह नौकरी छोड़ सकती है। महिलाओं का सेना में बढ़ते महत्व से वह अब सेना में लम्बे समय तक अपनी सेवा दे सकती हैं साथ ही महिलाओं को अपनी नेतृत्व क्षमता दिखाने का मौका मिलेगा।

शोध विधि : इस शोध में हमारा अध्ययन गुणात्मक रहेगा। अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों स्त्रोतों का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोतों में आधिकारिक दस्तावेजों (सरकार की रिपोर्ट्स) तथा द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में विभिन्न लेखों, पुस्तकों, समाचारों आदि का प्रयोग किया जाएगा। अधिकांश डाटा तथा जानकारी द्वितीयक स्त्रोतों पर आधारित होगी।

अनुसन्धान के उद्देश्य :

- यह जानना कि भारतीय सैन्य बल में महिलाओं की स्तिथि क्या है।
- यह अध्ययन करना कि लडाकू क्षेत्र में महिलाओं को भूमिका देनी चाहिए या नहीं।
- यह जानना कि सेना में महिलाओं को लाने के लिए क्या क्या प्रयास किए जा रहे हैं।

भारतीय रक्षा क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका

भारत नारी शक्ति का रूप है, नारी आज हमारी शक्ति व गौरव का प्रतीक है। आज नारी शक्ति देश की सुरक्षा में तैनात हैं। देश की तीनों सेनाओं (थलसेना, वायुसेना, नौसेना) में महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही है। सेना में अधिकारियों की नियुक्ति एनडीए और ओटीए तथा आईएमए द्वारा की जाती है। महिला अफसर ओटीए और आईएमए के जरिए चुनी जाती है। वर्ष 2021 में एनडीए के माध्यम से भी महिला अधिकारियों को चुनने का निर्णय लिया गया। तीनों रक्षा बलों में कुल 9118 महिलाएं अधिकारी के रूप में सेवा दे रही हैं। भारतीय सेना में 6,807 महिला अधिकारी, वायुसेना में 1,607 महिला अधिकारी तथा नौसेना में 704 महिला अधिकारी शामिल है। अभी भी यह संख्या बहुत कम है। धीरे धीरे इनकी संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। महिलाओं को वायुसेना और नौसेना में कॉम्बेट रोल दे दिया गया है तथा साथ ही सेना में कॉम्बैट अर्म स्पोर्ट में शामिल किया गया है। यह भारत की रक्षा क्षेत्र का अटूट अंग बनती जा रही है। यह सत्य है कि महिलाएं को जिस भी क्षेत्र में मौका मिला है उन्होंने अद्भुत प्रदर्शन किया है।

थल सेना

महिला अधिकारियों को भारतीय सेना में दस शाखाओं में स्थायी कमीशन प्रदान किया जाता है, ये सिग्नल, इंजीनियर्स, आर्मी एविएशन, आर्मी एयर डिफेंस, जज एडवोकेट जनरल (JAG), आदि धाराएँ हैं। भारतीय सेना ने सैन्य पुलिस में अन्य रैंकों में महिलाओं की भर्ती शुरू की है। मई 2021 में 100 महिला सैन्य पुलिस का पहला बैच पास आउट हुआ और उन्हें विभिन्न इकाइयों में तैनात किया गया है। सेना में बहुत बहादुर महिला अधिकारी हैं, जिन्होने देश व पूरी दुनिया के लिए उदाहरण पेश किए हैं। भदुरिया: भारतीय सेना में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली महिला है। प्रिया सेमवाल: आतंकवाद विरोधी में अपने पति को खोने के बाद अधिकारी के रूप में शामिल होने वाली पहली सेना जवान की पत्नी है Sharma, Gupta, 2021)। गुंजन सक्सैना जिन्होंने कारगिल युद्ध के दौरान कई घायल सैनिकों की जान बचाई। भारतीय सेना में महिलाओं को चाहे लड़ाई से दूर रखा गया हो, पर जिस मेहनत, लगन से वह कार्य कर रही है, अवश्य व आने वाले समय में किसी जर्नल व ब्रिगेडियर की भूमिका में देखी जाएगी।

वायु सेना

वायु सेना में 2015 में फाइटर स्ट्रीम में महिला को शामिल किया गया। वायु सेना में 16 फाइटर पायलट हैं। पहली बार 2016 में तीन महिला फाइटर पायलट बनी अवनि चतुर्वेदी, भावना कान्त और मोहना सिंह। रफेल उड़ाने वाली एकमात्र महिला पायलट लेफ्टिनेंट शिवांगी सिंह हैं। दिपिका मिश्रा हेलीकॉप्टर एक्रोबैटिक टीम के लिए प्रशिक्षण लेने वाली पहली महिला पायलट है। महिलाओं के द्वारा देश को गौरवानवित करने वाला प्रदर्शन रहा है। 2021 में सरकार ने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में महिलाओं की एंट्री को मंजूरी दे दी है। आज के समय में भारतीय वायुसेना में महिला अधिकारियों को बिना किसी प्रतिबंध के सभी लड़ाकू भूमिकाओं में शामिल किया जा रहा है।

नौसेना

यदि हम भारतीय नौसेना में महिलाओं का प्रदर्शन देख तो महिलाएं नौसेना में वर्ष 1992 से ही कार्यरत हैं। इसमें पहले महिलाएं कानून, शिक्षा तथा रसद कार्य में ही तैनात थी पर समय के साथ महिलाओं के लिए कई रास्ते खुल गए। भारतीय नौसेना ने 2021 में महिला अधिकारियों को युद्धपोतों पर तैनात करना शुरू कर दिया। मुकुन्दीनी त्यागी और रीति सिंह को युद्धपोतों में तैनात होने का गौरव प्राप्त हुआ।

भारतीय सशस्त्र बल में महिलाओं का इतिहास

ब्रिटिश काल में पहली बार 1888 में महिलाओं को सैन्य नर्सिंग सेवा में शामिल किया गया। इससे भारतीय सेना में महिलाओं की भूमिका आकार लेने लगी। भारतीय सेना की नर्सों ने 1914 से 1945 तक प्रथम □□□□□ युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध में अपनी उत्कृष्ट सेवा दी। सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका लंबे समय से चिकित्सा पेशे यानि डॉक्टरों और नर्सों तक ही सीमित थी। 1992 महिलाओं के लिए विमानन, रसद, कानून, इंजीनियरिंग और कार्यकारी संवर्गों में नियमित अधिकारी के तौर पर दरवाजे खोल दिए गए (Yadav, Tripathi, 2020)। आरंभ में महिलाएं पांच वर्ष के लिए ही सेवाएं दे सकती थी, परन्तु 2006 में महिलाओं को एस.एस.सी में पुरुषों के समान 10 वर्ष तक सेवा देने का मौका दिया गया। यदि वह चाहे तो अपनी सेवा को 4 साल के लिए बढ़ा सकती हैं। 2008 में महिलाओं के लिए जज एडवोकेट जनरल और सेना शिक्षा कोर की धाराओं में महिलाओं के लिए एक स्थायी कमीशन दिया गया। प्राय: महिलाओं को सेना में चिकित्सा कानूनी शैक्षणिक और इंजीनियरिंग विंग आदि में चुनिंदा भूमिका दी जाती थी, पर अब इनकी भूमिका व्यापक बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। महिलाओं को वायुसेना में फाइटर पायलट के रूप में शामिल करने के लिए 2016 में तीन महिलाओं पर प्रायोगिक परीक्षण किया गया जो कि सफल परीक्षण रहा। अब महिलाएं को वायुसेना में लड़ाकू भूमिका पर तैनात किया जाएगा (ibid)।

वर्ष 2020 में महिला अधिकारियों को भारतीय सेना के दस प्रभागों में स्थायी कमीशन प्रदान किया गया है। महिलाओं की सेना में अवदीर्ण भागीदारी तथा बढते रुझान को देखते हुए सेना में इनकी भूमिका को बढाने की आवश्यकता है। प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण 2021 के दौरान घोषणा की कि सभी सैनिक स्कूल अब लड़कियों के लिए खुले रहेंगे। घोषणा के बाद, सभी सैनिक स्कूलों ने लड़कियों को प्रवेश दिया है और अब तक 350 से अधिक लड़कियों को प्रवेश दिया जा चुका है (PIB report 2021) आगामी शैक्षणिक सत्र में संख्या बढ़ने की संभावना है। सैनिक स्कूलों को सभी लड़कों के स्कूलों से सह-शिक्षा में बदलने से व्यक्तित्व और गुणों का विकास होगा। सभी विद्यालयों में सर्वोत्तम संभव अंतःक्रिया पद्धति अपनाई जा रही है। इस निर्णय ने लड़कियों के कैडेटों के लिए लड़कों के समान गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के द्वार खोल दिए हैं (ibid)। यह निर्णय महिलाओं के विकास के लिए सराहनीय है।

महिलाओं की लड़ाकू भूमिका

सेना में महिलाओं की भूमिका, विशेष रूप से युद्ध में बहुत सीमित है। शस्त्र बलों के तीनों बलो में महिला अधिकारियों की कुल संख्या लगभग 3.3% से 10.4% के बीच है। अभी तक भारत सरकार द्वारा सशस्त्र बलों में लड़ाकू भूमिका के रूप में महिलाओं को शामिल करने के लिए कोई नीति और योजना नहीं बनाई गई है (Minhas, Arora, 2015)। वायु सेना में महिलाओं को फाइटर पायलट में शामिल किया जा रहा है। भारतीय नौसेना के द्वारा भी महिलाओं को वॉरशिप में लाया जा रहा है। परन्तु अभी भी पैदल सेना में महिलाओं को टैंक तथा फ्रंटलाइन आदि में अनुमति नहीं है। महिलाओं को लड़ाकू भूमिका देनी चाहिए या नहीं इस पर लंबे समय से बहस चल रही है। महिलाओं को हर क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में कम आंका गया है। महिलाओं को कॉम्पैक्ट रोल न देने के लिए भी बहुत सी दलीलें दी जाती है। महिलाओं को लड़ाकू भूमिका न देने के लिए लोगों द्वारा यह तर्क दिए जाते हैं, कि पुरुष सैनिक महिला अधिकारियों की आज्ञा को मानने के लिए तैयार नहीं होते हैं, तथा महिलाएं शारीरिक रूप से पुरुषों की तुलना में कमजोर होती है। कई बार महिलाओं को युद्ध के दौरान बंदी बनाया जाने का भी खतरा रहता है, तथा महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न जैसी घटनाओं का भय रहता है जिससे महिलाओं की मानसिकता पर प्रभाव पड़ सकता है। कई लोगों के द्वारा यह दलीले दी जाती है कि महिलाओं के गर्भ व मातृत्व के कारण वह इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त नहीं है तथा महिलाओं के द्वारा घर की देखभाल के दौरान अधिक समय लग जाता है जिसके कारण भी वह इस क्षेत्र में अपनी भूमिका को सही ढंग से नहीं निभा सकती। इस प्रकार कई दलीलें दी जाती है, कि महिलाओं को इस लड़ाकू भूमिका में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

क्या महिलाओं को लड़ाकू भूमिका दी जानी चाहिए

इस बात से इनकार नहीं जा सकता कि कॉम्पैक्ट रोल में अत्यंत कठोर वातावरण में दृढ़ निश्चय तथा कठिन परिश्रम, बहादुरी, त्याग व बलिदान की आवश्यकता होती है, पर हम इस बात को भी नहीं इनकार सकते कि महिलाएं इन सब भूमिकाओं को नहीं निभा सकती हैं। हां यह सत्य है, कि महिलाएं की प्राकृतिक बनावट पुरुषों से भिन्न होती है पर उन्हें भी पुरुषों के ही समरूप परीक्षण, दिया जा सकता है और नारी शक्ति, क्षमता का भरपूर प्रयोग देश की सुरक्षा के लिए किया जा सकता है। समाज में महिलाओं के प्रति जो रूढ़िवादी सोच तथा पूर्वाग्रह विद्यमान है, उन्हें बदलने की आवश्यकता है तथा महिलाओं के लिए समान अवसर की समानता पर बल दिया जाना चाहिए। महिलाओं की क्षमता का परीक्षण किए बिना महिलाओं को लड़ाकू भूमिका से वंचित करना उचित नहीं है। महिलाओं को सशस्त्र बलों में अधिक प्रमुख भूमिका देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। कई बार महिलाओं ने वैयक्तिक तौर से युद्ध में अपनी भूमिकाएं निभाई है। कर्नल मधुमिता पहली महिला थीं जिन्हें गैलेंट्री सेना मेडल मिला। उन्होंने अफगानिस्तान में 19 लोगों की जान बचाई थी। बालाकोट स्ट्राइक में बिग कमांडर अभिनंदन को वीर चक्र से सम्मानित किया गया था, साथ ही मिंती अग्रवाल को उत्तम युद्ध सेना मेडल दिया गया। हमें हमारी महिलाओं की क्षमता को पहचानना की आवश्यकता है तथा इस क्षमता का उपयोग देश की रक्षा में करना चाहिए।

आधुनिक युग के कॉम्बैट रोल की दशा में परिवर्तन आ रहा है। आज कई देशों ने अपने सशस्त्र बलों में महिलाओं की भूमिका का विस्तार करना शुरू कर दिया। अमेरिकी सेना में महिलाएं सक्रिय सेना का लगभग 15.7 प्रतिशत हिस्सा हैं। इज़राइल दुनिया के देशों में से एक है जहां महिलाओं को मिलिट्री में भाग लेना अनिवार्य है (नॉर्वे और इरिट्रिया के साथ)। ब्रिटेन में महिलाएं सेना में अधिकांश नौकरियों के लिए आवेदन करने में सक्षम हैं, पर इन्फैंट्री, कैवेलरी, बख्तरबंद कोर वर्तमान में महिलाओं के लिए खुले नहीं हैं। चीन में महिलाएं सैन्य सहायता पदों पर काम कर रही हैं। अत: यह ज़रूरी है कि महिलाएं ही तय करें की वह इस क्षेत्र में आना चाहती है या नहीं। यह निर्णय महिलाओं का ही होना चाहिए। यदि वह पूर्व निर्धारित ट्रेनिंग को पास कर लेती है तो उन्हें जरूर इस क्षेत्र में लाया जाना चाहिए। क्योंकि देश की आँधी जनसंख्या को नज़रअन्दाज़ कर देंगे तो देश व समाज का विकास नहीं कर सकेंगे।

निष्कर्ष

समाज में विकास तथा सुधारों की प्रक्रिया अत्यंत धीमी चलने वाली प्रक्रिया है। यदि हम महिलाओं की पूर्व की स्थिति की बात करें तो पाएंगे कि उनकी स्थिति काफी दयनीय थी। महिलाओं की इस स्तिथि में धीरे-धीरे व स्तत बदलाव हुए हैं। सेना में भी महिलाओं की स्तिथि में सुधार धीरे धीरे लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। महिलाओं ने सैन्य बलों में ईमानदारी पूर्वक कर्तव्य-निष्ठावान हो कर अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। जब-जब महिलाओं को मौका दिया गया है, तब-तब महिलाओं का सेना में अचंभित कर देने वाला चमत्कारी प्रदर्शन रहा है, उन्होंने अपने देशभक्ति के जज्बे को साबित करके दिखाया है। अभी भी महिलाओं को सशस्त्र बल में विशेष रूप से लड़ाकू क्षेत्र में शामिल ना करना देश की आधी जनसंख्या को नज़रअंदाज करना है। महिलाओं की योग्यता व क्षमता की जांच किए विना उन्हें लडाकू क्षेत्र से बंछित नहीं किया जाना चाहिए। डॉ सीमा राव जिन्हें भारत की वंडर महिला के नाम से भी जाना जाता है, यह देश की महिलाओं के लिए प्रेरणा व मिसाल बनी है। उन्होंने देश की स्पेशल फोर्स को ट्रेनिंग दी उनके द्वारा लगभग 15,000 से भी अधिक कमांडो को ट्रेनिंग दी गई। इन्होंने साबित करके दिखाया है कि महिलाएं ट्रेनर बन सकती है तो वह कॉम्बैट रोल भी निभा सकती हैं। यदि किसी भी व्यक्ति में अपने देश की रक्षा व मातृभूमि के लिए बलिदान देने का ज्जबा है तो लैंगिक असमानता रुकावट नहीं होनी चाहिए। देश की रक्षा करना पुरूष वर्ग का ही दायित्व नहीं है, देश की रक्षा हर नागरिक का कर्तव्य है। हर व्यक्ति को अपनी इच्छा से व्यवसाय चुनने का संवैधानिक अधिकार है। यदि हम सेना में काबिल महिलाओं की संख्या में वृद्धि करते हैं, तो इससे हम सेना में जवानों की कमी को भी पूरा कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

- पी आई बी रिपोर्ट 2021
- शर्मा, ए., और गुप्ता, पी. के. (2021). रिप्रेजेंटेशन ऑफ वूमेन इन इंडियन आर्म्ड फोर्सेस. *एकेडमी लेटर्स.*
- यादव, पी., और त्रिपाठी, पी. के. (2020). वुमन इन कॉम्बैट रोल: इशु ऑफ जेंडर सेंसिटाइजेशन एंड जेंडर इक्वैलिटी – साइकोलॉजिकल इंटरप्रिटेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी.*
- मिन्हास, डब्ल्यू. सी. जे. एस., और अरोड़ा, एन. (2015). कॉम्बैट रोल फॉर वूमेन इन द इंडियन आर्म्ड फोर्सेस. *ग्लोबल जर्नल ऑफ ह्यूमन-सोशल साइंसेज.*
- हार्डिंग, टी. ए. (2012). वूमेन इन कॉम्बैट रोल्स: केस स्टडी ऑफ फीमेल इंगेजमेंट टीम्स.
- ट्रिस्को डार्डन, जे. (2015). एसेसिंग द सिग्निफिकेंनस ऑफ वूमेन इन कॉम्बैट रोल्स. *इंटरनेशनल जर्नल.*
- बुरेली, डी. एफ. (1998, नवंबर). वूमेन इन द आर्म्ड फोर्सेस. रिसर्च सर्विस, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस.
- कामर्क, के. एन. (2019, जून). डायवर्सिटी, इंक्लूजन, एंड इक्वल इक्वल ओपॉर्चुनिटी इन द आर्म्ड सर्विसेज: बैकग्राउंड एंड इश्यूज़ फॉर कांग्रेस. लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस वाशिंगटन डीसी.